

"कमजोर संस्कारों का संस्कार कर सच्ची होली मनाओ तब संसार परिवर्तन होगा"

आज बापदादा अपने चारों ओर के राज दुलारे बच्चों को देख रहे हैं। यह परमात्म दुलार आप कोटों में कोई श्रेष्ठ आत्माओं को ही प्राप्त है। हर एक बच्चे के तीन राज तख्त देख रहे हैं। यह तीन तख्त सारे कल्प में इस संगम पर ही आप बच्चों को प्राप्त होते हैं। दिखाई दे रहे हैं तीन तख्त? एक तो यह भ्रुकुटी रूपी तख्त, जिस पर आत्मा चमक रही है। दूसरा तख्त है - परमात्म दिल तख्त। दिल तख्त नशीन हो ना! और तीसरा है - भविष्य विश्व तख्त। सबसे भाग्यवान बने हो दिल तख्तनशीन बनने से। यह परमात्म दिल तख्त आप तकदीरवान बच्चों को ही प्राप्त है। भविष्य विश्व का राज्य तख्त तो प्राप्त होना ही है। लेकिन अधिकारी कौन बनता? जो इस समय स्वराज्य अधिकारी बनता है। स्वराज्य नहीं तो विश्व का राज्य भी नहीं क्योंकि इस समय के स्व राज्य अधिकार द्वारा ही विश्व राज्य प्राप्त होता है। विश्व के राज्य के सर्व संस्कार इस समय बनते हैं। तो हर एक अपने को सदा स्वराज्य अधिकारी अनुभव करते हो? जो भविष्य राज्य का गायन है - जानते हो ना! एक धर्म, एक राज्य, लॉ एण्ड ऑर्डर, सुख-शान्ति, सम्पत्ति से भरपूर राज्य, याद आता है - कितने बार यह स्वराज्य और विश्व राज्य किया है? याद है कितने बार किया है? क्लीयर याद आता है? कि याद करने से याद आता है? कल राज्य किया था और कल राज्य करना है - ऐसे स्पष्ट स्मृति है? यह स्पष्ट स्मृति उस आत्मा को होगी जो अभी सदा स्वराज्य अधिकारी होगा। तो स्वराज्य अधिकारी हो? सदा हो या कभी-कभी? क्या कहेंगे? सदा स्वराज्य अधिकारी हो? डबल फारेनर्स का टर्न है ना। तो स्वराज्य अधिकारी सदा हो? पाण्डव सदा हैं? सदा शब्द पूछ रहे हैं? क्यों? जब इस एक जन्म में, छोटा सा तो जन्म है, तो इस छोटे से जन्म में अगर सदा स्वराज्य अधिकारी नहीं हैं तो 21 जन्म का सदा स्वराज्य कैसे प्राप्त होगा! 21 जन्म का राज्य अधिकारी बनना है कि कभी-कभी बनना है? क्या मंजूर है? सदा बनना है? सदा? कांध तो हिलाओ। अच्छा, 21 जन्म ही राज्य अधिकारी बनना है? राज्य अधिकारी अर्थात् रॉयल फैमिली में भी राज्य अधिकारी। तख्त पर तो थोड़े बैठेंगे ना, लेकिन वहाँ जितना तख्त अधिकारी को स्वमान है, उतना ही रॉयल फैमिली को भी है। उन्हों को भी राज्य अधिकारी कहेंगे। लेकिन हिसाब अभी के कनेक्शन से है। अभी कभी-कभी तो वहाँ भी कभी-कभी। अभी सदा तो वहाँ भी सदा। तो बापदादा से सम्पूर्ण अधिकार लेना अर्थात् वर्तमान और भविष्य का पूरा-पूरा 21 जन्म राज्य अधिकारी बनना। तो डबल फारेनर्स पूरा अधिकार लेने वाले हो या आधा या थोड़ा? क्या? पूरा अधिकार लेना है? पूरा। एक जन्म भी कम नहीं। तो क्या करना पड़ेगा?

बापदादा तो हर एक बच्चे को सम्पूर्ण अधिकारी बनाते हैं। बने हैं ना? पक्का? कि बनेंगे या नहीं बनेंगे क्वेश्चन है? कभी-कभी क्वेश्चन उठता है - पता नहीं बनेंगे, नहीं बनेंगे? बनना ही है। पक्का? जिसको बनना ही है वह हाथ उठाओ। बनना ही है? अच्छा, यह सब किस माला के मणके बनेंगे? 108 के? यहाँ तो कितने आये हुए हैं? सभी 108 में आने हैं? तो यह तो 1800 हैं। तो 108 की माला को बढ़ायेंगे? अच्छा। 16 हजार तो अच्छा नहीं लगता। 16 हजार में जायेंगे क्या? नहीं जायेंगे ना! यह निश्चय और निश्चित है, ऐसा अनुभव हो। हम नहीं बनेंगे तो कौन बनेगा। है नशा? आप नहीं बनेंगे तो और कोई नहीं बनेगा ना। आप ही बनने वाले हो ना! बोलो, आप ही हो ना! पाण्डव आप ही बनने वाले हो? अच्छा। अपना दर्पण में साक्षात्कार किया है? बापदादा तो हर बच्चे का निश्चय देख बलिहार जाते हैं। वाह! वाह! हर एक बच्चा वाह! वाह वाह वाले हो ना! वाह! वाह! कि व्हाई। व्हाई तो नहीं? कभी-कभी व्हाई हो जाता? या तो है व्हाई और हाय और तीसरा क्राय। तो आप तो वाह! वाह! वाले हो ना!

बापदादा को डबल फारेनर्स के ऊपर विशेष फखुर है। क्यों? भारतवासियों ने तो बाप को भारत में बुला लिया। लेकिन डबल फारेनर्स के ऊपर फखुर इसलिए है कि डबल फारेनर्स ने बापदादा को अपने सच्चाई के प्यार के बंधन में बांधा है। मैजारिटी सच्चाई वाले हैं। कोई-कोई छिपाते भी हैं लेकिन मैजारिटी अपनी कमजोरी सच्चाई से बाप के आगे रखते हैं। तो बाप को सबसे बढ़िया चीज लगती है - सच्चाई। इसलिए भक्ति में भी कहते हैं गाड इज ट्रूथ। सबसे प्यारी चीज सच्चाई है क्योंकि जिसमें सच्चाई होती है उसमें सफाई रहती है। क्लीन और क्लीयर रहता है। इसलिए बापदादा को डबल फारेनर्स के सच्चाई की प्रेम की रस्सी खींचती है। थोड़ा बहुत मिक्स तो होता है, कोई-कोई। लेकिन डबल फारेनर्स अपनी यह सच्चाई की विशेषता कभी नहीं छोड़ना। सत्यता की शक्ति एक लिफ्ट का काम करती है। सबको सच्चाई अच्छी लगती है ना! पाण्डव अच्छी लगती है? ऐसे तो मधुबन वालों को भी अच्छी लगती है। सभी चारों ओर के मधुबन वाले हाथ उठाओ। दादी कहती है ना भुजायें हैं। तो मधुबन, शान्तिवन सब हाथ उठाओ। बड़ा हाथ उठाओ। मधुबन वालों को सच्चाई अच्छी लगती है? जिसमें सच्चाई होगी ना, उसको बाप को याद करना बहुत सहज होगा। क्यों? बाप भी सत्य है ना! तो सत्य बाप की याद जो सत्य है उसको जल्दी आती है। मेहनत नहीं करनी पड़ती है। अगर अभी भी याद में मेहनत लगती है तो समझो कोई न कोई सूक्ष्म संकल्प मात्र, स्वप्न मात्र कोई सच्चाई कम है। जहाँ सच्चाई है वहाँ संकल्प किया बाबा, हज़र हाजर है। इसलिए बापदादा को सच्चाई बहुत प्रिय है।

तो बापदादा सभी बच्चों को यही इशारा देते हैं - कि पूरा वर्सा 21 ही जन्मों का लेना है तो अभी स्वराज्य को चेक करो। अब का स्वराज्य अधिकारी बनना, जितना जैसा बनेंगे उतना ही अधिकार प्राप्त होगा। तो चेक करो - जैसे गायन है एक राज्य...., एक ही राज्य होगा, दो नहीं। तो वर्तमान स्वराज्य की स्थिति में सदा एक राज्य है? स्वराज्य है वा कभी-कभी पर-राज्य भी हो जाता है? कभी माया का राज्य अगर है तो पर-राज्य कहेंगे या स्वराज्य कहेंगे? तो सदा एक राज्य है, पर-अधीन तो नहीं हो जाते? कभी माया का, कभी स्व का? इससे समझो कि सम्पूर्ण वर्सा अभी प्राप्त हो रहा है, हुआ नहीं है, हो रहा है। तो चेक करो सदा एक राज्य

है? एक धर्म - धर्म अर्थात् धारणा। तो विशेष धारणा कौन सी है? पवित्रता की। तो एक धर्म है अर्थात् संकल्प, स्वप्न में भी पवित्रता है? संकल्प

में भी, स्वप्न में भी अगर अपवित्रता की परछाई है तो क्या कहेंगे? एक धर्म है? पवित्रता सम्पूर्ण है? तो चेक करो, क्यों? समय फास्ट जा रहा है। तो समय फास्ट जा रहा है और स्वयं अगर स्लो है तो समय पर मंज़िल पर तो नहीं पहुंच सकेंगे ना! इसलिए बार-बार चेक करो। एक राज्य है? एक धर्म है? लॉ और आर्डर है? कि माया अपना आर्डर चलाती है? पर-मात्म बच्चे श्रीमत के लॉ और आर्डर पर चलने वाले। माया के लॉ एण्ड आर्डर पर नहीं। तो चेक करो - सभी भविष्य के संस्कार अभी दिखाई दें क्योंकि संस्कार अभी भरने हैं। वहाँ नहीं भरने हैं, यहाँ ही भरने हैं। सुख है? शान्ति है? सम्पत्तिवान हैं? सुख अभी साधनों के आधार पर तो नहीं है? अतीन्द्रिय सुख है? साधन, इन्द्रियों का आधार है। अतीन्द्रिय सुख साधनों के आधार पर नहीं है। अखण्ड शान्ति है? खण्डित तो नहीं होती है? क्योंकि सतयुग के राज्य की महिमा क्या है? अखण्ड शान्ति, अटल शान्ति। सम्पन्नता है? सम्पत्ति से क्या होता है? सम्पन्नता होती है। सर्व सम्पत्ति है? गुण, शक्तियां, ज्ञान यह सम्पत्ति है। उसकी निशानी क्या होगी? अगर मैं सम्पत्ति में सम्पन्न हूँ - तो उसकी निशानी क्या? सन्तुष्टता। सर्व प्राप्ति का आधार है सन्तुष्टता, असन्तुष्टता अप्राप्ति का साधन है। तो चेक करो - एक भी विशेषता की कमी नहीं होनी चाहिए। तो इतना चेक करते हो? सारा संसार आप अभी के संस्कार द्वारा बनाने वाले हो। अभी के संस्कार अनुसार भविष्य का संसार बनेगा। तो आप सभी क्या कहते हो? कौन हो आप? विश्व परिवर्तक हो ना! विश्व परिवर्तक हो? तो विश्व परिवर्तक के पहले स्व-परिवर्तक। तो यह सब संस्कार अपने में चेक करो। इससे समझ जाओ कि मैं 108 की माला में हूँ या आगे पीछे हूँ? यह चेकिंग एक दर्पण है, इस दर्पण में अपने वर्तमान और भविष्य को देखो। देख सकते हो?

अभी तो होली मनाने आये हो ना! होली मनाये आये हो, अच्छा। होली के अर्थ को वर्णन किया है ना! तो बापदादा आज विशेष डबल फारेनर्स को कहते हैं, मधुबन वाले साथ में हैं, यह बहुत अच्छा है। मधुबन वालों को भी साथ में कह रहे हैं। जो भी आये हैं, चाहे बॉम्बे से आये हैं, चाहे दिल्ली से आये हो, लेकिन इस समय तो मधुबन निवासी हो। डबल फारेनर्स भी इस समय कहाँ के हो? मधुबन निवासी हो ना! मधुबन निवासी बनना अच्छा है ना! तो सभी बच्चों को चाहे यहाँ सामने बैठे हैं, चाहे अपने अपने चारों तरफ के स्थानों पर बैठे हैं, बापदादा एक परिवर्तन चाहते हैं - अगर हिम्मत हो तो बापदादा बतावे। हिम्मत है? हिम्मत है? हिम्मत है? करना पड़ेगा। ऐसे नहीं हाथ उठा लिया तो हो गया, ऐसा नहीं। हाथ उठाना तो बहुत अच्छा है लेकिन मन का हाथ उठाना। आज सिर्फ यह हाथ नहीं उठाना, मन का हाथ उठाना।

डबल फारेनर्स नजदीक बैठे हैं ना, तो नजदीक वालों को दिल की बातें सुनाई जाती हैं। मैजारिटी देखने में आता है, कि सभी का बापदादा से, सेवा से बहुत अच्छा प्यार है। बाप के प्यार के बिना भी नहीं रह सकते और सेवा के बिना भी नहीं रह सकते हैं। यह मैजारिटी का सर्टीफिकेट ठीक है। बापदादा चारों ओर देखते हैं लेकिन...., लेकिन आ गया। मैजारिटी का यही आवाज आता है कि कोई न कोई ऐसा संस्कार, पुराना जो चाहते नहीं हैं लेकिन वह पुराना संस्कार अभी तक भी आकर्षित कर लेता है। तो जब होली मनाने आये हो तो होली का अर्थ है - बीती सो बीती। हो ली, हो गई। तो कोई भी जरा भी कोई संस्कार 5 परसेन्ट भी हो, 10 परसेन्ट हो, 50 परसेन्ट भी हो, कुछ भी हो। कम से कम 5 परसेन्ट भी हो तो आज संस्कार की होली जलाओ। जो संस्कार समझते हैं सभी कि थोड़ा सा यह संस्कार मुझे बीच-बीच में डिस्टर्ब करता है। हर एक समझता है। समझते हैं ना? तो होली एक जलाई जाती है, दूसरी रंगी जाती है। दो प्रकार की होली होती है और होली का अर्थ भी है, बीती सो बीती। तो बापदादा चाहते हैं - कि जो भी कोई ऐसा संस्कार रहा हुआ है, जिसके कारण संसार परिवर्तन नहीं हो रहा है, तो आज उस कमजोर संस्कार को जलाना अर्थात् संस्कार कर देना। जलाने को भी संस्कार कहते हैं ना। जब मनुष्य मरता है तो कहते हैं संस्कार करना है अर्थात् सदा के लिए खत्म करना है। तो क्या आज संस्कार का भी संस्कार कर सकते हैं? आप कहेंगे कि हम तो नहीं चाहते कि संस्कार आवें, लेकिन आ जाता है, क्या करें? ऐसे सोचते हो? अच्छा। आ जाता है, गलती से। अगर किसको दी हुई चीज़, गलती से आपके पास आ जाए तो क्या करते हो? सम्भाल के अलमारी में रख देते हो? रख देंगे? तो अगर आ भी जाये तो दिल में नहीं रखना क्योंकि दिल में बाप बैठा है ना! तो बाप के साथ अगर वह संस्कार भी रखेंगे, तो अच्छा लगेगा? नहीं लगेगा ना! इसलिए अगर गलती से आ भी जाये, तो दिल से कहना बाबा, बाबा, बाबा, बस। खत्म। बिन्दी लग जायेगी। बाबा क्या है? बिन्दी। तो बिन्दी लग जायेगी। दिल से कहेंगे तो। बाकी ऐसे ही मतलब से याद करेंगे - बाबा ले लो ना, ले लो ना, रखते हैं अपने पास और कहते हैं ले लो ना, ले लो ना। तो कैसे लेंगे? आपकी चीज़ कैसे लेंगे? पहले आप अपनी चीज़ नहीं समझो तब लेंगे। ऐसे थोड़ेही दूसरे की चीज़ ले लेंगे। तो क्या करेंगे? होली मनायेंगे? हो ली, हो ली। अच्छा, जो समझते हैं कि दृढ़ संकल्प कर रहे हैं, वह हाथ उठाओ। आप घड़ी-घड़ी निकाल देंगे ना, तो निकल जायेगी। अन्दर रख नहीं दो, क्या करें, कैसे करें, निकलता नहीं है। यह नहीं, निकालना ही है। तो दृढ़ संकल्प करेंगे? जो करेगा वह मन से हाथ उठाना, बाहर से नहीं उठाना। मन से। (कोई-कोई नहीं उठा रहे हैं) यह नहीं उठा रहे हैं। (सभी ने उठाया) बहुत अच्छा, मुबारक हो, मुबारक हो। क्या है कि एक तरफ एडवांस पार्टी बापदादा को बार-बार कहती है - कब तक, कब तक, कब तक? दूसरा - प्रकृति भी बाप को अर्जा करती है, अभी परिवर्तन करो। ब्रह्मा बाप भी कहते हैं कि अब कब परमधाम का दरवाजा खोलेंगे? साथ में चलना है ना, रह तो नहीं जाना है ना! साथ चलेंगे ना! साथ में गेट खोलेंगे! चाहे चाबी ब्रह्मा बाबा लगायेगा, लेकिन साथ तो होंगे ना! तो अभी यह परिवर्तन करो। बस, लाना ही नहीं है। मेरी चीज़ ही नहीं है, दूसरे की, रावण की चीज़ क्यों रखी है! दूसरे की चीज़ रखी जाती है क्या? तो यह किसकी है? रावण की है ना! उसकी चीज़ आपने क्यों रखी है? रखनी है? नहीं रखनी है ना, पक्का? अच्छा। तो रंग की होली भले मनाना लेकिन पहले यह होली मनाना। आप देखते हो, आपका गायन है - मर्सीफुल। आप मर्सीफुल देवियां और देवतायें हो ना! तो रहम नहीं आता है? अपने भाई-बहिन इतने दुःखी हैं, उन्हीं का दुःख देख करके रहम नहीं आता? आता है रहम? तो संस्कार बदलो, तो संसार बदल जायेगा। जब तक संस्कार नहीं बदले हैं, तब तक संसार नहीं बदल सकता। तो क्या करेंगे?

आज खुशखबरी सुनी थी कि सबको दृष्टि लेनी है। अच्छी बात है। बापदादा तो बच्चों के आज्ञाकारी हैं लेकिन... लेकिन सुनकर हंसते हैं। भले हंसो। दृष्टि के लिए कहते हैं - दृष्टि से सृष्टि बदलती है। तो आज की दृष्टि से सृष्टि परिवर्तन करना ही है, क्योंकि सम्पन्नता वा जो भी प्राप्तियां हुई

हैं, उसका बहुत समय से अभ्यास चाहिए। ऐसे नहीं समय पर हो जायेगा, नहीं। बहुत समय का राज्य भाग्य लेना है, तो सम्पन्नता भी बहुत समय से चाहिए। तो ठीक है? डबल फारेनर्स खुश हैं? अच्छा।

इस बारी शान्तिवन के बेहद घर में रहे हो ना! देखो हर स्थान का अपना-अपना लाभ है। ऊपर का लाभ अपना है और शान्तिवन का लाभ अपना है। यहाँ परिवार के समीप हैं, दादियों के समीप हैं, और वहाँ बापदादा की कर्मभूमि के समीप होते हैं। लेकिन अच्छा लगता है या नहीं? थोड़ा-थोड़ा याद आता है? बापदादा को तो यही खुशी है कि डबल फारेनर्स की एक ही समय की संख्या बढ़ रही है। संख्या के कारण ऊपर नहीं रह सके ना। तो संख्या बढ़ना तो खुशी की बात है ना! और एक ही समय पर आपस में एक साथ रहना, यह भी तो अनुभव है ना! और मधुबन वालों को डबल फारेनर्स को थैंक्स देना चाहिए कि डबल फारेनर्स ने अपने टाइम पर विशेष मधुबन निवासियों को चांस दिया है। मधुबन वाले ताली बजाओ। देखो, मधुबन वाले कितने खुश हो रहे हैं। नहीं तो मधुबन वालों को पूरी सीजन में चांस कहाँ मिला है और डबल फारेनर्स ने चांस दिया, तो बापदादा भी थैंक्स देते हैं। अच्छा।

डबल फारेनर्स के सेवा के प्रोग्राम्स भी सुने हैं। अच्छे प्रोग्राम्स बनाये हैं। जिन्होंने भी सेवाओं के सन्देश भेजे हैं वह बापदादा ने सुने हैं और अच्छा है क्योंकि फारेन में अगर बड़े-बड़े प्रोग्राम्स करेंगे तो फारेन का आवाज अभी मीडिया द्वारा भारत में पहुंच सकता है क्योंकि अभी भारत वालों ने ट्रायल की है ना, कि भारत का आवाज मीडिया द्वारा फारेन में पहुंचे। तो फारेन वालों को भी मीडिया द्वारा भारत में आवाज फैलाना है। मीडिया का साधन अच्छा है। तो जो भी प्रोग्राम्स बनाये हैं वह बापदादा को पसन्द हैं। प्रैक्टिकल में लाओ। तो प्रैक्टिकल में लाने से आवाज फैलेगा। ठीक है ना! अच्छा है। और एक बात देखी - कि फारेन की बापदादा को लिस्ट मिली है। किस बात की लिस्ट मिली? जो बापदादा ने कहा था कि जो भी सेवा से स्नेही, सहयोगी बने हैं, चाहे वर्गीकरण की सेवा से, चाहे कॉन्फ्रेंस की सेवा से, तो कौन-कौन स्नेही सहयोगी बने हैं, वह लिस्ट दो। तो आज बापदादा के पास नम्बरवन लिस्ट फारेन से मिली, इसके लिए मुबारक हो। अच्छी मेहनत की है। यू.के. की, यूरोप की और कहाँ की लिस्ट है? अच्छा है भारत वालों को भी लिस्ट निकालनी चाहिए तो कभी इन्टरनेशनल स्नेही सहयोगियों का संगठन करेंगे। एक दो का अनुभव सुनकर भी उमंग में आते हैं। तो यह भी नम्बरवन फारेन की लिस्ट आई है, इसलिए बापदादा खुश हैं। बाकी सभी के पत्र और कार्ड तो आते ही हैं। आजकल तो ईमेल बहुत आते हैं। तो जिन बच्चों ने भी समाचार दिये हैं, चाहे भारत के चाहे विदेश के। भारत में भी शिवरात्रि के प्रोग्राम्स बहुत धूमधाम से किये हैं और समाचार भी दिये हैं। अभी समय की रफ्तार से आगे रफ्तार करो। अच्छा।

बापदादा ने सुना कि बहुत देशों के आये हुए हैं। सब देशों के मुख्य डबल फारेन से जो भी आये हैं, तो हर एक देश के एक-एक मुख्य निमित्त टीचर उठो। 77 देशों से आये हुए हैं। अच्छा। पाण्डव भी हैं, बहनें भी हैं। सबको टी.वी. में दिखाओ। अच्छा किया है, मुबारक हो। अपने-अपने ग्रुप को ले आये हैं, यहाँ तक बनाके तैयार किया है, इसके लिए बापदादा आप एक-एक को पर्सनल मुबारक दे रहे हैं। अच्छी सेवा की है। अच्छा। (सभी की ग्रुप वाइज भट्टी चली है) यह अच्छा किया है। स्पेशल एक-एक संगठन की जो भट्टी रखी, उसमें हर एक को अपने-अपने डिपार्टमेंट में रहकर, संगठन में रहकर मजा भी आता है। तो यह जो विधि रखी, वह अच्छा है। बहुत अच्छा है। अच्छा लगा ना! (पहली बार युगलों की, कुमारों की अलग भट्टी हुई है) कुमार उठो। अच्छा लगा? अलग भट्टी की तो अच्छा लगा। वैसे कुमारों की होती भी रहती है। अच्छा है। सभी कुमार अमर भव के वरदानी हो ना। अमर भव का वरदान मिला हुआ है ना! अमर ही रहना। अच्छा।

(युगल उठो) बहुत अच्छा। (विष्णु के सिम्बल का झण्डा सबके हाथ में है) बहुत अच्छा। बापदादा को अच्छा लगा। अभी सदा ही प्रवृत्ति को प्रवृत्ति नहीं, पर वृत्ति, पर वृत्ति माना न्यारी और प्यारी वृत्ति में रहना। तो प्रवृत्ति वाले नहीं, पर वृत्ति वाले युगल हैं। बहुत अच्छा, मुबारक हो।

(अधर कुमार उठो) सभी अधरकुमार जो भी हैं उन्होंने को क्या नशा रहता है? हमारा कम्पेनियन आलमाइटी अर्थोरिटी है। कम्पेनियन भी बाप है, कम्पनी भी बाप की। तो अधर कुमार सदा इसी नशे में रहना। बाप के साथ कम्बाइन्ड हैं। अपने को सिंगल नहीं समझना। कम्बाइन्ड हैं। बाप और आप कम्बाइन्ड हैं। बहुत अच्छा।

(कुमारियां उठो) कुमारियां भी हैं तो ब्रह्माकुमारियां भी हैं। वैसे भी कुमारी हैं और ब्रह्माकुमारी तो हैं ही। तो कुमारियां क्या करेंगी? कमाल करके दिखायेंगी? अभी बापदादा के सेवा के राइट हैण्ड हैं। राइट हैण्ड हो ना! अच्छा है कुमारियों को देख करके बापदादा बहुत खुश होते हैं कि यह कितनी आत्माओं के कल्याण के निमित्त बनेंगी। विश्व कल्याणकारी बनेंगी। बहुत अच्छा।

(मातायें उठो) मातायें होशियार बहुत हैं। देखो बापदादा ने माताओं को ही विशेष आगे बढ़ने का चांस दिया है। तो चांस को प्रैक्टिकल में लाया इसके लिए बहुत-बहुत मुबारक हो। बहुत अच्छा शक्ति अवतार, अपने संगठन को और बढ़ाओ। जहाँ तहाँ माताओं की संख्या ज्यादा है। डबल फारेन में भी माताओं की संख्या अभी भी ज्यादा है, भारत में भी माताओं की संख्या ज्यादा है। सारे कल्प में अभी तो चांस मिला है तो अपना चांस अच्छा लिया है।

(सेन्टर निवासी और एन.सी.ओ. मीटिंग के भाई बहिनें उठो) बहुत अच्छा - सेन्टर निवासी अर्थात् पुण्य का खाता बढ़ाने वाले। जो भी आता है उनको बाप का परिचय देके बाप का बनाते हो, यह पुण्य जमा होता है। तो सेन्टर निवासी सदा अपने को मैं पुण्य आत्मा हूँ, पुण्य जमा करने का चांस मिला है। जितना-जितना पुण्य जमा होता जायेगा तो जरा भी स्वप्न मात्र, अगर थोड़ा भी पाप की रेखा रह गई, वह खत्म हो जायेगी। तो पुण्य आत्माओं का ग्रुप है। अच्छा है कुमार, पाण्डव भी सेवा के निमित्त बने हैं, यह भी बहुत अच्छा चांस मिला है। सदा सेवा को बढ़ाने के निमित्त

आत्मायें हैं। पाण्डव, चाहे शक्तियां दोनों को बापदादा सेवा की मुबारक दे रहे हैं। अच्छा।

(छोटे बच्चों ने भी रिट्रीट की है, बच्चे उठो) अच्छा लगा, बच्चों को बहुत अच्छा लगा! अच्छा है। बच्चे कमाल करके दिखायेंगे। बच्चे ऐसी सेवा करेंगे जो कोई बड़ों ने नहीं की हो क्योंकि बच्चों से सबको प्यार होता है। तो बहुत अच्छा किया है, बहुत अच्छा। अच्छा।

स्पाक ग्रुप भी आया है :- बहुत अच्छा है। अनुभवी मूर्त बन, अनुभव कराने का प्रैक्टिकल में रिसर्च कर रहे हैं। और इसी को, अनुभूति कराने की रीसर्च को और बढ़ाओ। प्रैक्टिकल में सबूत लाओ तो दुनिया एकजैम्पुल देख करके सहज मान जाती है। अच्छा है। आगे बढ़ते चलो और एकजैम्पुल बन औरों को भी एकजैम्पुल बनाओ। बहुत अच्छा।

मधुबन निवासी उठो:- (सभी ने खूब तालियां बजाई) देखो, सभी का मधुबन निवासियों से कितना प्यार है। मधुबन निवासियों की सेवा को देख सब बहुत खुश होते हैं। लोग भी कहते हैं कि यह कौन चलाता है, कौन डायरेक्शन दे रहा है, यह पता ही नहीं पड़ता है। जैसे मशीन चल रही है। तो मधुबन निवासियों की यह सेवा का भाग्य बहुत बड़ा है। जो भी ग्रुप आता है, उसके आगे एकजैम्पुल तो मधुबन निवासी होते हैं। चाहे भाषण नहीं करो, सेन्टर पर बैठकर मुरली नहीं सुनाओ, लेकिन एकजैम्पुल बनना, यह सबसे बड़ी सेवा है। सबको सन्तुष्टता का अनुभव कराना, यह बहुत बड़ी सेवा है। इसलिए मधुबन वालों से चाहे फारेनर्स, चाहे भारत के सबका प्यार है। और कहाँ भी मधुबन वाले जाते हैं, तो मधुबन की हर आत्मा को बहुत रिगार्ड से देखते हैं। सबके मुख से निकलता है - मधुबन से आये हैं। तो मधुबन वाले कम नहीं हैं। साकार ब्रह्मा बाबा कहते थे "जो चुल पर है वह दिल पर है।" तो मधुबन निवासी चुल पर भी हैं, दिल पर भी हैं। बापदादा का हर एक मधुबन निवासी से प्यार है। प्यार के पात्र हैं क्योंकि सेवा में सन्तुष्ट करने का लक्ष्य रखा है। अच्छा है। संगठन भी देखो कितना बड़ा है। तो सेवा और संगठन की मुबारक। डबल फारेनर्स को खुशी हो रही है। मधुबन वालों को देख के खुशी होती है।

अच्छा - बापदादा की बात याद रखना - भूल नहीं जाना। अभी पुराने संस्कार की समाप्ति की सेरीमनी मनायेंगे, पसन्द है ना! उस सेरीमनी में आपको बुलायेंगे। जो करेगा, उसको बुलायेंगे। अच्छा।

चारों ओर के सर्व तीन तख्त नशीन, विशेष आत्माओं को, सदा स्वराज्य अधिकारी विशेष आत्माओं को, सदा रहमदिल बन आत्माओं को सुख-शान्ति की अंचली देने वाले महादानी आत्माओं को, सदा दृढ़ता और सफलता का अनुभव करने वाले बाप समान आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

दादियों से:- बेफिकर बादशाह हैं। बापदादा सदा ही बेफिकर बादशाह के रूप में देखते हैं। कारण क्या है? बेफिकर क्यों हैं? क्योंकि दिल बड़ी है। जहाँ दिल बड़ी होती है ना तो जो होना है वह हो जाता है। जो आना है वह आ जाता है। (बड़ा बाबा, बड़ी दिल, बड़ा परिवार)

(परदादी से) बहुत अच्छा, संगठन में आ गई बहुत अच्छा किया। सभी याद तो करते हैं ना! बहुत अच्छा। दिल में बातें बहुत करती है। सब दिल से कह देती है। रुहरिहान बहुत करती है ना! रुहरिहान बहुत करती है। बहुत अच्छा। तबियत को भी चला तो रही है ना! यह ठीक है। अच्छा है ना! पुराना शरीर है, लेकिन पुराने शरीर में भी आपको देखकर सब खुश होते हैं। आदि रत्न हैं ना, तो सब खुश होते हैं। सबका नाम लेते हैं कितना आपको याद करते हैं। अच्छा है।

(मनोहर दादी से) सभी को अपना-अपना पार्ट अच्छा मिला है। जहाँ भी रहते हैं वह स्थान शानदार स्थान हो जाता है। सबको खुशी होती है कोई दादी बैठी है। मधुबन के श्रृंगार हो। हैं ना! अच्छा।

विदेश की बड़ी बहिनों से:- यह ग्रुप भी बहुत अच्छा निकला है। अच्छा है, सभी आलराउण्ड सेवाधारी हैं। सेवा में मजा आता है ना! अच्छा है विश्व के चारों कोनों में आवाज तो फैलाया ना। ठीक है, सबकी तबियत ठीक है? बहुत अच्छा ग्रुप है। बापदादा का सेवा से प्यार है, बच्चों से प्यार है। बहुत अच्छा, जो भी आये हैं, उनकी सेवा का प्लैन भी बहुत अच्छा बनाया है, मुबारक हो। सभी ने मिलकर बहुत अच्छा बनाया है।

अच्छा - ओम् शान्ति।